भोर और बरखा - 16

शब्दार्थ

रजनी - रात

कुलाहल - शोर मचाना

सुर - देवता

बदरिया - बादल

उमग्यौ - उमंग से भरा हुआ

चहुंदिस - चारों दिशाओं

दामिन - बिजली

मेहा - बादल

शीतल - ठंडी

पवन - हवा

भावार्थ => पहले प्रसंग में -
मीराबाई श्रीकृष्ण के बाल रूप का वर्णन करते हुए कहती है कि हे वंसी वाले श्रीकृष्ण मेरे लाल मेरे प्यारे जाग जाओ, रात बीत गई है सुबह हो गई है। गोपियों के कंगनों के खनकने की आवाज़ें आने लगीं हैं क्योंकि वो दही बिलोने लगीं हैं। उठो लाल मनुष्य तथा देवता सभी तुम्हारे दर्शन के लिए द्वार पर खड़े हैं। सभी बाल-ग्वाल हाथ में माखन रोटी लिए तुम्हार नाम लेकर शोर मचा रहे हैं। आगे मीरा कहती है कि हे मेरे गिरधर गोपाल जो कोई भी तुम्हारी शरण में आया है तुम उसका उद्धार करो।

दूसरे प्रसंग में मीराबाई सावन के सुहावने मौसम का वर्णन करते हुए कहती है कि सावन के महीने में चारों तरफ घनघोर घटाएं घिरी हैं जिन्हें देखकर मीरा का मन उमंग से भर गया है बादलों में बिजली चमक रही है तथा मीरा को ऐसा महसूस हुआ है कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं तो वह इस खुशी में मंगल गीत गाना चाहती है।